[redacted]

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य 2 रु०
वर्ष: 72 अंक: 48
सृष्टि संवत् 1960853116
28 फरवरी 2016
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रु०
आजीवन : 1000 रु०
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–72, अंक : 48, 5/8 फरवरी 2016 तदनुसार 16 फाल्गुन सम्वत् 2072 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

अतिथिसेवा

–ले० श्री स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

हिरण्यस्त्रगयं मणिः श्रद्धां यज्ञं महो दधत्। गृहे वसतु नोऽतिथिः।।
तस्मै घृतं सुरां मध्वन्नमन्नं क्षदामहे।
स नः पितेव पुत्रेभ्यः श्रेयः श्रेयश्चिकित्सतु
भूयोभूयः श्वः श्वो देवेभ्यो मणिरेत्य।।

शब्दार्थ–मानो **हिरण्यस्त्रक्** = सुवर्णमालाधारी **मणिः** = मणिसमान अर्थात् अत्यन्त आदरणीय **अयम्** = यह **अतिथिः** = अतिथि **श्रद्धाम्** = श्रद्धा को **यज्ञम्** = **यज्ञ** = परोपकार आदि शुभ कर्मों तथा **महः** = पूज्यता को **दधत्** = धारण करता हुआ **नः** = हमारे **गृहे** = घर में **वसतु** = रहे। **तस्मै** = उसे **घृतम्** = घृत **सुराम्** = अर्क, शर्बत **मधु**+**अन्नम्**+**अन्नम्** = मधुर पदार्थ, नाना प्रकार के अन्न **क्षदामहे** = हम भेंट करते हैं। **सः** = वह **मणिः** = आदरणीय, उपदेष्टा अतिथि **एत्य** = आकर **इव** = जैसे **पिता** = पिता **पुत्रेभ्यः** = पुत्रों को, वैसे **नः** = हमें **भूयः** + **भूयः** = बार बार **श्वः** + **श्व** : = कल-कल अर्थात् निरन्तर **देवेभ्यः** = दिव्य गुणों के लिए **श्रेयः** + **श्रेयः** = प्रत्येक प्रकार के कल्याण का **चिकित्सतु** = ज्ञान कराए।

व्याख्या–वैदिक धर्म यज्ञप्रधान धर्म है। प्रत्येक वैदिक धर्मों के लिए ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ, पितृयज्ञ और अतिथियज्ञ–ये पाँच महायज्ञ नित्यकर्म हैं। इनके न करने से पाप माना गया है। इन पाँच यज्ञों में एक अतिथियज्ञ है। अथर्ववेद का पन्द्रहवाँ काण्ड अतिथियज्ञ की महिमा द्योतित कर रहा है। आर्यों का आतिथ्य जगत्प्रसिद्ध है।

ऊपर के दो मन्त्रों में अतिथि के सम्बन्ध में जो निर्देश हैं, उन्हें समझ लिया जाए तो अतिथि का महत्त्व सरलता से हृदयङ्गम हो सकता है।

१. अतिथि को **हिरण्यस्त्रक्** कहा है। अतिथि हिरण्यस्त्रक् = सुवर्णमालाधारी होना चाहिए। इसके दो भाव हैं कि लोग अतिथि के गले में सुवर्णादि बहुमूल्य पदार्थों की मालाएँ डालें, अर्थात् उसे नानाविध बहुमूल्य पदार्थ भेंट करें। दूसरा अभिप्राय यह है कि अतिथि हिरण्य = हितरमणीय पदार्थों की मालावाला हो, अर्थात् जनहित के अनेक साधनों से वह सम्पन्न हो, समय-समय पर वह लोगों को हितकारी, मनोहारी उपाय बतलाकर कल्याण करे।

२. मणि = हीरा आदि। अतिथि स्वयं मणि हो। मणि की भाँति बहुमूल्य हो। ज्ञान = ध्यानादि दुर्लभ साधनों वाला हो, लोग उसका समादर करें।

३. स्वयं श्रद्धालु हो, अन्यों में श्रद्धा उत्पन्न कर सके, स्वयं सत्यकर्म करता हो और लोगों को सत्कर्मों की प्रेरणा करता हो। उसके आचार-व्यवहार और विचारों के कारण लोग उसमें श्रद्धा रखते हों, उसे पूज्य मानते हों और

४. वह लोगों से इस प्रकार स्नेह रखता हो, जैसे पिता अपने पुत्रों पर प्रीति करता है और बार-बार लोगों को उत्तमोत्तम कल्याण-साधनों का प्रेम से उपदेश करें।

इस अन्तिम निर्देश में एक ऐसी बात कही है, जो बहुत ही मनन करने योग्य है। हितोपदेष्टा जनता को अपनी सन्तान समझे। पितृसमान स्नेह करते हुए सन्तान को हितोपदेश करे। कदाचित् इस वैदिक निर्देश के आधार पर ही आज भी संन्यासी को 'बाबाजी' कहते हैं। अथर्ववेद १५।११।१ = २] में अतिथिसेवा का प्रकार भी बताया है–

तद्यस्यैवं विद्वान् व्रात्योऽतिथिर्गृहानागच्छेत्।।१।।
स्वमेनमभ्युदेत्य ब्रूयाद् व्रात्य क्वाऽवात्सीर्व्रात्योदकं व्रात्य तर्पयन्तु व्रात्य यथा ते प्रियं तथास्तु व्रात्य यथा ते वशस्तथास्तु व्रात्य यथा ते निकामस्तथास्त्विति।।२।।

यदि व्रतविभूषित विद्वान् अतिथि घर आ जाए तो वह गृहपति स्वयं उठकर उसके पास जाकर कहे–'व्रात्य!' कहाँ रहे ? व्रात्य! जल लीजिए। व्रात्य! कृपा कीजिए, प्रसन्न हूजिए। व्रात्य! जो आपको प्रिय लगे, वैसा ही होगा। व्रात्य! जो आपकी इच्छा है, वही होगा। व्रात्य! जो आपकी कामना है वही होगा।

इन मन्त्रों में अतिथि को 'व्रात्य' कहा गया है और अथर्व० १०।६।४ में उसे 'हिरण्यस्त्रक्' कहा गया है। दोनों का तात्पर्य एक है। अतिथि के आने पर वैदिकों को बहुत प्रसन्नता होती है। जैसा कि अथर्ववेद १५।१०।१-२ में कहा है–

तद्यस्यैवं विद्वान व्रात्यो राज्ञोऽतिथिर्गृहानागच्छेत्।।१।।
श्रेयांसमेनमात्मनो मानयेत।।२।।

तो ऐसा व्रतों से सुशोभित विद्वान अतिथि जिस राजा के घर आ जाए, वह इसे अपना कल्याण समझे।

सचमुच वह बड़ा भाग्यशाली है जिसके घर ऐसे विद्वान्, धार्मिक, सत्योपदेष्टा पधारें। ये वीतराग संन्यासी ही होते हैं। ऋषि दयानन्द अतिथि का अर्थ बतलाते हैं–"अतिथि उसको कहते हैं कि जिसकी कोई तिथि निश्चित न हो, अर्थात् [जो] अकस्मात् धार्मिक, सत्योपदेशक, सबके उपकारार्थ सर्वत्र घूमनेवाला, पूर्ण विद्वान्, परमयोगी, संन्यासी गृहस्थ के यहाँ आवे.....।।" –सत्यार्थप्रकाश, चतुर्थसमुल्लास

अतिथि की उपयोगिता के विषय में लिखते हैं–

"जब तक उत्तम अतिथि जगत् में नहीं होते तब तक उन्नति भी नहीं होती। उनके सब देशों में घूमने और सत्योपदेश करने से पाखण्ड की वृद्धि नहीं होती और सर्वत्र गृहस्थों को सहज से सत्य विज्ञान की प्राप्ति होती रहती है और मनुष्य-मात्र में एक ही धर्म स्थिर रहता है। बिना अतिथियों के सन्देहनिवृत्ति नहीं होती। सन्देहनिवृत्ति के बिना दृढ़निश्चय भी नहीं होता। निश्चय के बिना सुख कहाँ ?"

–सत्यार्थप्रकाश, चतुर्थसमुल्लास

–स्वाध्याय संदोह से साभार

कौन प्रभु उपासना करता है

-ले० यश शर्मा मन्त्री आर्य समाज माडल टाऊन यमुनानगर

ओ३म् ईङते त्वामवस्यवः कण्वासो वृक्तबर्हिषः।
हविष्मन्तो अरङकृतः।।
-ऋग्वेद 1-14-5

इस मन्त्र का अर्थ है कि हे परमेश्वर, अवस्यु, कण्व, वृक्तबर्हिष, हविष्मन्त और अरंङकृत तुझको भजते हैं अर्थात् तेरी स्तुति, उपासना करते हैं।

अवस्यु कौन हैं ? अवस्यु वह है जो हृदय से अपनी रक्षा चाहता है। रक्षा किससे चाहता है ? रक्षा चाहता है पाप-ताप, दुर्गुण, व्यसन, दुख-दर्द, कष्ट क्लेश, अपराध, छल-कपट, फरेब, अनाचार, व्यभिचार, भ्रष्टाचार, बुराई से। जो सच्चे हृदय से इन सबसे रक्षा चाहता है वह अवस्यु है। परमात्मा पवित्र है तो वह अवस्यु को भी शुद्ध, पवित्र, सरल, निश्चल, स्वच्छ, निर्मल बना देगा। तभी तो हम नित्य प्रतिदिन में कई बार इस मन्त्र को बोलते हैं-

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।
यद भद्रं तन्न आ सुव।।
युयोध्यस्मज्जुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम।।

हे प्रभु हमें अच्छे गुण, कर्म, स्वभाव प्रदान करो और हमारी कुटिलता को दूर कर दो, हमारी बुराई को दूर करो। संस्कृत में अव धातु का अर्थ है गति। जो प्रभु से उत्साह व प्रेरणा पाकर गतिशील अर्थात् एक्टिव हो जाते हैं जैसे महर्षि स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, आदि और वर्तमान में देखें तो बाबा रामदेव जिन्होंने लाखों-करोड़ों लोगों को गतिमान कर दिया, योग के द्वारा। गति, ज्ञान, गमन अर्थात विशेष ज्ञान जो हृदय को आलोकित कर दे, प्रकाशमान कर दे। ऐसे व्यक्ति के कार्य दिव्य हो जाते हैं, आचरण दिव्य हो जाता है, श्रेष्ठ पुरुष बन जाते हैं। ऐसे व्यक्ति का आहार, व्यवहार, विचार, स्वभाव बदल जाते हैं। वह निराला व आला व्यक्ति बनकर उभरता है। वह जो विशेष पाना चाहता है, उपलब्ध करना चाहता है, उसे सब मिल जाता है। धन, संतान, पुत्र पौत्र तो सबके पास है। परन्तु ऐसे अवस्यु को अद्वितीय शांति, सुख, पवित्रता, दिव्यता मिलते हैं। जो ये सब चाहता है वह प्रभु की उपासना करता है।

अव का अगला अर्थ है कांति अर्थात् आभा, प्रभा, अंग्रेजी में इसे ओरा कहते हैं। आजकल तो ओरा टैस्ट करने के यन्त्र भी आ गए हैं। जो प्रभु की सच्ची उपासना करता है उतनी उसकी कांति बढ़ती जाती है। प्रभु अग्नि स्वरूप है, प्रकाश स्वरूप है। जो उसका साधक है, साधना में रत रहता है वह पवित्र, सरल, निश्चल, सौम्य, शांत हो जाता है। उसकी कांति दिन प्रतिदिन बढ़ती जाएगी। अव का अगला अर्थ है प्रीति। इस संसार में प्रीति, प्यार, दुलार, स्नेह तो सबको मिलता रहता है। लेकिन साधक को प्रभु की प्रीति, स्नेह, प्यार दुलार मिलने लगता है। जो श्रद्धा-भक्ति से प्रभु की स्तुति, उपासना करता है प्रभु उससे प्रीति करते हैं।

अव का एक अर्थ है तृप्ति। संसार के सभी सुख भोगने पर भी जिनकी तृप्ति नहीं होती, वे प्रभु को भजते हैं। एक ऐसी अवस्था आ जाती है जब सांसारिक पदार्थ धन, वैभव, पत्नी, संतान आदि किसी को तृप्त नहीं कर पाते, फिर वे प्रभु को भजते हैं। इतिहास में कई ऐसे राजे महाराजे हुए हैं जिन्होंने सब कुछ त्याग कर प्रभु की उपासना की जैसे बुद्ध, महावीर भोज आदि।

अव का एक अर्थ अवगम भी है अर्थात् जानना। संसार को नहीं, बल्कि विशेष रहस्यों को जानना, जिन्हें जानने से व्यक्ति के संशय मिट जाते हैं। उपनिषदों के ऋषि, दर्शन शास्त्रों के ऋषि, वेदों के सही अर्थ करने वाले ऋषियों ने न जाने कितने गूढ़, रहस्य जानने होंगे, जन्म-मृत्यु, आत्मा-परमात्मा के विषय में, कर्मगति, परम गति के बारे में, बन्ध-मोक्ष के बारे में। ऐसे ऋषि अवस्यु ही तो थे जो हमारा मार्गदर्शन करते रहे हैं। हम लोगों के लिए अध्यात्म का राह दिखा गए हैं।

अव का एक अर्थ है स्वाम्थर्य अर्थात स्वामित्व। क्या जो दुनिया पर स्वामित्व चाहते हैं वह अवस्यु हैं, नहीं। जो अपने ऊपर स्वामित्व चाहते हैं, अपने शरीर, मन, इन्द्रियों पर अधिकार, नियन्त्रण चाहते हैं। हमारा कान कुछ भी सुनवा देता है, आंख कुछ भी दिखा देती है, नाक कुछ भी सुंघवा देता है, मन तो जागते हुए भी और सोते हुए भी हमारे वश में नहीं आता। हमारा मन, बुद्धि, इन्द्रियां हमारे से कुछ भी करवा लेती हैं। परन्तु जो अपने ऊपर अधिकार, नियन्त्रण, स्वामित्व चाहते हैं, वे उस परम पिता परमेश्वर को भजते हैं व अपने स्वामी स्वयं बनते हैं।

अव का एक अर्थ है याचना अर्थात् मांगना। जिनको धन, अन्न, वस्त्र अर्थात् सांसारिक पदार्थों की आवश्यकता है परन्तु किसी से मांगना नहीं चाहते, वे प्रभु की स्तुति, उपासना करते हैं। तभी तो सन्ध्या के प्रथम मन्त्र "ओ३म् शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयो रभि स्रवन्तु नः।। में प्रभु से मनोवांछित व पूर्णानन्द की कामना की गई है। प्रभु मनोवांछित तो देते ही हैं और सच्चे हृदय से संकल्प करके, पूर्ण पुरुषार्थ किया जाए तो पूर्णानन्द भी प्रदान करते हैं।

अव का अगला अर्थ है इच्छा अर्थात् इच्छा विशेष। इच्छा विशेष की पूर्ति के लिए उपासना करते हैं। हमारी मलिनता उस अग्निरूप प्रभु में पड़कर कुन्दन बन जाती है। प्रभु की विशेष अनुकम्पा होती है। मुंशी राम से स्वामी श्रद्धानन्द बन जाते हैं। अमींचन्द जैसा व्यक्ति हीरा बनकर एक कवि बन जाता है।

अव का एक अर्थ है दीप्ति अर्थात् प्रकाश। जो जीवन में सच्चा प्रकाश अर्थात् ज्ञान चाहते हैं, प्रभु उनके हृदयगत तम को मिटाकर प्रकाश कर देता है। इन्द्रिय रूप गवाक्षों/खिड़कियों/छिद्रों से प्रकाश बाहर भी देदीप्यमान हो जाएगा।

अव का एक अर्थ है प्राप्ति। जो हमें मानव रूप में प्रभु से प्राप्त हुई है जैसे यह शरीर, इसका एक-एक अंग सिर, नाक, कान, आंख, हाथ, पैर, दांत लीवर, किडनी, हृदय, मन, बुद्धि, स्मरण शक्ति, नस, नाड़ी तंत्र आदि। प्रभु से जो हमें इस रूप में प्राप्ति हुई है इसे देखकर, उसे अनुभव कर निहाल हो जाता है। फिर मानव कह उठता है, कि हे प्रभो, आप कितने महान हो और बारम्बार उसका धन्यवाद करते हुए उसकी उपासना करता है।

अव का एक अर्थ है आलिंगन। जो प्रभु का आलिंगन करना चाहते हैं, वो प्रभु को भजते हैं कि शायद प्रभु कभी हमें अपने आलिंगन में ले लेगा। अपनी गोद में लेकर परम पद तक पहुंचा देगा। अव का एक अर्थ है हिंसा। हिंसा किसी पशु या व्यक्ति की नहीं करनी है बल्कि अच्छे उद्देश्य की प्राप्ति के लिए साधक को हिंसा करनी है अति काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, राग, द्वेष रूपी शत्रुओं की। ऐसे साधक प्रभु की उपासना करते हैं।

अव का एक अर्थ है वृद्धि। जो हृदय से अपनी वृद्धि अर्थात् उन्नति चाहता है वह प्रभु को भजते हैं। ईमानदारी से, धर्मपूर्वक पूर्ण पुरुषार्थ के पश्चात जो मिले उसे प्रसन्नतापूर्वक अहोभाग्य मानकर संतुष्ट रहते हुए प्रभु की स्तुति करते हैं।

इस प्रकार जो चाहते हैं अपने जीवन में गति-कांति-प्रीति-तृप्ति-अवगम-स्वामित्व-याचना-इच्छा-दीप्ति-अवाप्ति-आलिंगन-हिंसा-वृद्धि, वे सब परम पिता परमेश्वर की स्तुति/प्रार्थना/उपासना करते हैं। प्रभु को दिल से भजते हैं, वे सब अवस्यु हैं।

ऋग्वेद के इस मन्त्र में दूसरा शब्द आया है "कण्वासो।" कण्व का अर्थ है मेधावी, बुद्धिमान, अकलमंद।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय.....✍

जे.एन.यू. विवाद देश के लिए शर्मनाक घटना

देश के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय जेएनयू में हुए भारत विरोधी प्रदर्शन पर विवाद दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। कोई इसे अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का मुद्दा बता रहा है तो कोई इसे राष्ट्रद्रोह की श्रेणी में रख रहा है। हालांकि इस विषय पर दो राय नहीं हो सकती कि नौ फरवरी को लगाए गए देश विरोधी नारे निन्दनीय और अस्वीकार्य हैं। निश्चित रूप से यह घटना देश के लिए शर्मानाक घटना है। इस घटना में जितने भी दोषी पाए जाते हैं उन पर सख्त से सख्त कार्रवाई होनी चाहिए। देश में रहते हुए इस तरह के देश विरोधी नारे लगाना किसी भी कीमत पर अस्वीकार्य हैं और आगे कभी इस प्रकार की घटना न हो इसके लिए दोषियों को सख्त सजा होनी चाहिए।

राष्ट्र विरोधी गतिविधियों को निष्प्रभावी करने के लिए सारे राष्ट्र को एकजुट होकर खड़े होना चाहिए परन्तु जेएनयू विवाद के बाद देश की राजनीति में जो उबाल आया है उसे देशकर और सुनकर किसी का भी सिर शर्म से झुक सकता है। क्या वर्तमान राजनीति इतनी हद तक गिर गई है कि राष्ट्रविरोधी घटनाओं में भी अपना स्वार्थ देख रहे हैं? राजनीति में यह कहां तक उचित है कि देश के विरोध में होने वाली घटनाओं को अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता कहा जाए? क्या देश के विरोध में बोलना, देश के खिलाफ नारे लगाना ही बोलने की आजादी है। क्या आतंकवादियों का महिमामंडन करना ही अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता है? क्या ऐसी घटनाओं पर नेताओं को संयम बरतने की आवश्यकता नहीं है? क्या ऐसी घटनाओं को अपनी शर्मनाक बयानबाजी से तूल देना देश के हित में है? ये कुछ ऐसे मुद्दे है जिनका जबाव आज देश का प्रत्येक नागरिक चाहता है।

आज हमारे देश की राजनीति इतनी हद तक गिर गई है कि उनके लिए देशद्रोह की घटना भी अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता है। जेएनयू घटनाकांड के बाद जिस तरह से स्वार्थी नेता अपने-अपने बिलों से बाहर निकले है और अपने अनर्गल बयानों से इस घटना को तूल देकर अपना-अपना स्वार्थ देख रहे हैं, अपनी राजनीति को चमकाने की कोशिश कर रहे हैं उससे देश शर्मसार हो रहा है। देश के लिए अपनी जान कुर्बान करने वाले शहीदों का इससे बड़ा अपमान और क्या हो सकता है। जिन शहीदों ने देश की आन-बान और शान के लिए अपने आपको कुर्बान कर दिया उन शहीदों की शहादत के साथ ये लोग मजाक कर रहे हैं। इस घटना के बाद होना तो यह चाहिए था कि देश के सभी राजनीतिक दल एकजुट होकर इस घटना की निंदा करते और निष्पक्ष जांच कराकर कर दोषियों को दण्ड़ दिलवाते। ऐसे संवेदनशील मुद्दों पर अपना मुंह किसी को नहीं खोलना चाहिए था। हर किसी को इस घटना की कड़ी से कड़ी निंदा करनी चाहिए थी चाहे वे किसी भी विचारधारा और राजनीतिक दल से सम्बन्धित क्यों न हो। सब जानते हैं कि अफजल गुरू एक आतंकवादी था और उसे फांसी की सजा न्याय प्रक्रिया के अनुसार दी गई थी। परन्तु ऐसा हुआ नहीं क्योंकि इसका सबसे बड़ा कारण देश की वो राजनीतिक पार्टी है जिसने देश में लम्बे समय तक राज किया है और अभी तक हार को पचा नहीं पाए हैं। इसलिए सबसे पहले उसी पार्टी के एक नेता जेएनयू कैम्पस में पहुंचे और तय योजना के अनुसार इसका दोष भी मोदी सरकार के ऊपर लगा दिया कि मोदी सरकार देश में संघ की विचारधारा को थोंपना चाहती है, मोदी सरकार अभिव्यक्ति की आजादी का हनन कर रही है और लोगों की आवाज को दबा रही है। सबसे बड़े राजनीतिक दल का उपाध्यक्ष एक राष्ट्रविरोधी विचारधारा का समर्थन कर रहा है। भारत तेरे टुकड़े होंगे, अफजल हम शर्मिंदा हैं तेरे कातिल जिंदा हैं। ऐसी राष्ट्रविरोधी भाषा को वे अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता कह रहे हैं। क्या देश के विरोध में नारेबाजी करना, भारत के टुकड़े करना, यह बोलने की आजादी है। कब नेता इस बात को समझेंगे कि देश के अस्मिता और अखंड़ता के साथ किसी प्रकार का खिलवाड़ नहीं होना चाहिए। राजनीति में मतभेद हो सकते हैं, एक दूसरे की विचारधारा अलग हो सकती है परन्तु जहां पर देश की अस्मिता और अखंड़ता की बात आती है वहां पर हर किसी को एक मत होना चाहिए। राजनीति का अर्थ यह नहीं कि हर मुद्दे पर एक दूसरे को कोसते रहें, गालियां देते रहें और अपना स्वार्थ सिद्ध करते रहें।

इस देश की आजादी के लिए शहीदों ने अपने प्राणों की आहुतियां दी हैं तब जाकर हम आजाद हो पाए हैं। आज भी सियाचिन में बर्फ में रहकर जवान देश के लिए अपनी जान कुर्बान कर रहे हैं, कश्मीर में आए दिन देश की अस्मिता और अखंड़ता के लिए अपने आपको कुर्बान कर रहे हैं। उन शहीदों की आत्मा भी यह देखकर दुखी होगी कि जिस देश के लिए उन्होंने अपने प्राणों का बलिदान किया है उस देश में एक आतंकवादी को कुछ संकीर्ण मानसिकता वाले उपद्रवियों के द्वारा शहीद का दर्जा दिया जा रहा है। अपने-आपको बुद्धिजीवी कहलाने वाले, आराम की जिंदगी व्यतीत करने वाले, सरकारी सुविधाओं का भरपूर लाभ उठाते हुए भी जब इस तरह की देशविरोधी गतिविधियां करते हैं तो उन्हें कभी माफ नहीं किया जाना चाहिए। बुद्धिजीवी कहलाने का अर्थ यह नहीं कि बिना सोचे समझे कुछ भी बोलो। कोई भी मनुष्य बुद्धिजीवी कहलाने का अधिकारी तभी बनता है जब वह अपनी बुद्धि का उपयोग करता है। इसलिए राष्ट्र के विरोध में बोलना या नारेबाजी करने की घटनाओं को बुद्धिजीविता नहीं कहा जा सकता।

अंत में मैं केवल यही कहना चाहता हूं कि देश की अस्मिता और अखंड़ता के लिए सभी राष्ट्रवासियों को एकजुट होना चाहिए। राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में शामिल होना, उन्हें बढ़ावा देना राष्ट्रद्रोह है। ऐसी घटनाओं में शामिल किसी भी दोषी को माफ नहीं किया जाना चाहिए। ऐसे राष्ट्रद्रोहियों का समर्थन करना राष्ट्र का अपमान है, देशभक्त शहीदों का अपमान है। इसलिए हम सभी का कर्त्तव्य है कि देश की एकता और अखंड़ता को बनाए रखने में सहयोग करें और विघटनकारी ताकतों के खिलाफ एकजुट हो जाएं।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

काशी शास्त्रार्थ महोत्सव संस्मरण

-ले० चन्द्रशेखर लोखण्डे

काशी के दुर्गाकुण्ड आनन्दबाग में जहाँ सन् 1869 में स्वामी दयानन्द सरस्वती का चालीस पौराणिक विद्वानों के साथ मूर्तिपूजा पर शास्त्रार्थ हुआ था, उस ऐतिहासिक स्थली पर मुझे जाने का अवसर प्राप्त हुआ वह एक अविस्मरणीय घटना थी। मैं लातूर से पुणे होकर वाराणसी पहुंचा जहाँ 146 वाँ शास्त्रार्थ महोत्सव होने जा रहा था। आर्य उपप्रतिनिधि सभा वाराणसी द्वारा आयोजित इस महोत्सव में एक वक्ता के रूप में मुझे आमन्त्रित किया गया था। पहले दिन श्री प्रमोदजी आर्य की व्यवस्था निर्देशानुसार मैं भोजूवीर आर्यसमाज काशी में रूका। दूसरे दिन दुर्गाकुण्ड समीप आनन्द बाग में जहाँ कार्यक्रम निश्चित था अन्य विद्वानों के साथ पहुंचा जहां आर्य जगत के जाने माने विद्वान पधारे थे उनमें हरियाणा के स्वामी सुरेन्द्रानन्द, कानपुर के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री रवीन्द्रकुमार आर्य, रेवाडी हरियाणा की श्रीमती सुनीता शास्त्री, स्वामी केवलानन्द प्राध्यापक श्री शिवनारायणसिंह गौतम तथा अमेठी से पधारे डॉ. श्री प्रशस्यमित्र जी आदि प्रमुख थे।

दुर्गाकुण्ड के समीप जहाँ स्वामी दयानन्द जी ने वेदों में मूर्तिपूजा है वा नहीं ? इस विषय पर काशी के विद्वानों से शास्त्रार्थ किया था उस मिट्टी को स्पर्श करके मैं सिहर उठा और स्वयं को धन्यभागी होने का अनुभव करने लगा। मैं काशी शास्त्रार्थ पर पुस्तक लिखने विषय में खोज पूर्ण साहित्य पढ़ चुका हूँ और बहुत सारा लिख भी चुका हूँ, इस दृष्टि से भी यह यात्रा मेरे लिए उपादेय सिद्ध हुई। मैंने आनन्दबाग में वह स्थान देखा जहाँ काशीराज महाराजा ईश्वरी प्रसाद नारायणसिंह की उपस्थिति में यह ऐतिहासिक शास्त्रार्थ हुआ था। वह परिदृश्य देखकर मैं अनुभव करने लगा कि किस तरह स्वामीजी चारों और से काशी के पौराणिक शास्त्रार्थ महारथियों से घिरे हो कर भी उनके चक्रव्यूह को तोड़कर बाहर निकले और विश्वविजयी हुए। यह अनुभव इसलिए भी महत्वपूर्ण था, कि यहाँ आने से पूर्व स्वामीजी को कोई नहीं जानता था। काशीशास्त्रार्थ में विजयी होने के बाद ही उनकी गणना विश्व स्तर पर वेदों के उद्भट विद्वानों में होने लगी। काशी शास्त्रार्थ में दिग्विजय प्राप्त करने के पश्चात् उन्हें देश के अनेक भागों से व्याख्यानों के लिए आमन्त्रित किया जाने लगा। ब्रह्म समाज के नेता देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने कोलकाता आने के लिए बहुत आग्रह किया। उस समय ब्रिटिश भारत की राजधानी कोलकाता थी। कोलकाता से स्वामी दयानन्द जी की दिग् दिगन्त प्रसिद्धि होने लगी। मैंने दिनांक 21/11/2015 के भाषण में महाराष्ट्र और काशी का ऐतिहासिक सम्बन्ध दर्शाते हुए कहा कि-स्वामी जी ने सन् 1869 में शास्त्रार्थ से काशी जीतकर तथा सन् 1875 में महाराष्ट्र के मुंबई में आर्यसमाज की सर्वप्रथम स्थापना कर सामाजिक और धार्मिक सुधार के क्षेत्र में संपूर्ण विश्व को जीत लिया।

मुंबई अंग्रेजों की खुली सोच वाली नगरी रही है तथा महाराष्ट्र के समाज सुधारकों की कर्म-स्थली भी रही है। स्वामी जी के इन कार्यों को अंग्रेजों और समाज सुधारकों ने खुले मन से सराहा है।

महाराष्ट्र और काशी का सम्बन्ध सर्व प्रथम इस कारण से भी दृढ़ रहा है कि सत्रहवीं शती में छत्रपती शिवाजी के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटना भी काशी से जुड़ी हुई है। हुआ यह था कि महाराष्ट्र के कर्मकाण्डी ब्राह्मणों ने छत्रपती शिवाजी के राज्याभिषेक का विरोध किया था। शिवाजी महाराज के क्षत्रियत्व पर सवाल उठाते हुए उन्होंने राजसिंहासनारूढ़ होने के उनके अधिकार पर प्रश्न चिन्ह उपस्थित किये। लेकिन काशी के वेदमूर्ति धर्माचार्य गागाभट्ट ने यह कहकर छत्रपति शिवाजी के राज्याभिषेक की स्वीकृति दी कि विदेशी मुस्लिम आक्रान्ता हिन्दुओं पर अत्याचार कर आर्यावर्त के सिहांसन पर बैठ सकते हैं तो एक हिन्दू राजा जिसने चार-चार पातशाहियों को रौंदकर जन्म एवं कर्म से स्वयं को क्षत्रिय सिद्ध कर दिया हो और जो राजस्थान के सिसोदिया वंश का वंशज हो जिसका राज्याभिषेक वेदादि शास्त्रों से स्वयं सिद्ध है, उसका राज्यारोहण क्यों हो नहीं सकता ? यदि महाराष्ट्र के कर्मठ ब्राह्मण उनका राज्याभिषेक न करें, लेकिन काशी का यह ब्राह्मण उनका वेदोक्त पद्धति से राज्याभिषेक करेगा। इस प्रकार 6 जून 1674 ई. को. क्षत्रिय कुलावतंस छत्रपति शिवाजी महाराज को बड़े समारोह के साथ महाराष्ट्र के राजसिंहासन पर आरूढ़ किया गया।

इसी तरह काशी और महाराष्ट्र को जोड़ने वाली एक और पूर्ण मध्यकालीन ऐतिहासिक घटना का भी अपनी व्याख्या में जिक्र किया जो दोनों प्रदेशों को सांस्कृतिक दृष्टि से जोड़ती है। महाराष्ट्र के संत शिरोमणि ज्ञानेश्वर महाराज के पिता विठ्ठल पन्त अत्यन्त वैराग्य वृत्ति के थे। उनका विवाह रूक्मिणीबाई से हुआ था। गृहस्थ में मन न लगने और वैराग्य वृत्ति में वृद्धि होने के कारण उन्होंने काशी के सन्यासी स्वामी रामानन्द से सन्यास की दीक्षा ली। रामानन्द स्वामी जब दक्षिण की यात्रा पर निकले तब आळंदी गाँव में रूक्मिणी देवी ने स्वामीजी के दर्शन किये। स्वामी जी ने उन्हें पुत्रवती होने का आशीर्वाद दिया। जब रूक्मिणी ने विठ्ठल पन्त की घटना सुनाई तो उन्हें बड़ा पश्चाताप हुआ और उन्होंने वापस काशी लौटकर विठ्ठलपन्त को आदेश दिया कि आप वापस गृहस्थ धर्म में लौट जाओ।

विठ्ठलपन्त ने भी गुरू की आज्ञा मानकर फिर से गृहस्थी बनना स्वीकार किया। इस प्रकार स्वामी चैतन्याश्रम फिर से विठ्ठल पन्त बन गये। गृहस्थाश्रम में उनके तीन पुत्र और एक कन्या हुई। सन्त ज्ञानेश्वर का जन्म शकसम्वत 1197 अर्थात् ई. स. 1275 में जन्म हुआ। इस परावर्तन काल में इस परिवार को अत्यधिक अपमान सहन करना पड़ा। कर्मकाण्डियों के अमानवीय व्यवहार से पिता और पुत्र दोनों को प्राण त्यागने पड़े। संतश्रेष्ठ ज्ञानेश्वर ने ज्ञानेश्वरी जैसा आध्यात्मिक ग्रन्थ आयु के 17 वें वर्ष में रचा जो मराठी का प्रसिद्ध गीता काव्य भाष्य कहलाता है। इसी के साथ उन्होंने अनेक आध्यात्मिक ग्रन्थों की रचना की। उन्होंने सामाजिक जीवन में कष्ट और अपमान सहन करते हुए महज 21 वर्ष की आयु में स्वेच्छा देह त्याग (समाधि) कर इस असार संसार को त्याग दिया।

स्वामी आयुर्वैदिक आश्रम का शुभारम्भ

स्वामी कृष्णानन्द सरस्वती जी द्वारा संचालित स्वामी आयुर्वैदिक आश्रम के नवनिर्मित भवन का शुभारम्भ दिनांक 28 फरवरी 2016 दिन रविवार को किया जाएगा। प्रात: हवन यज्ञ के द्वारा कार्यक्रम का शुभारम्भ किया जाएगा। इस अवसर पर मुख्य अतिथि स. गुरप्रताप सिंह वडाला विधायक नकोदर, श्री कुँवर विजय प्रताप सिंह आई.पी. एस. तथा ब्रिगेडियर आर. के. शर्मा होंगे। 11:30 बजे नवनिर्मित भवन का उद्घाटन किया जाएगा। ऋषि लंगर 12 बजे दोपहर बाद होगा। आप सभी इस अवसर पर सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं। आप सबसे अनुरोध है कि आप समय पर पहुँच कर समारोह की शोभा बढाएँ।

स्वर्ग व मोक्ष का यथार्थ स्वरूप

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला रोड, देहरादून

प्राय: सभी मतों के अनुयायी व विद्वान किसी न किसी रूप में स्वर्ग की चर्चा करते हैं और मानते हैं कि इस पृथिवी से अन्यत्र किसी स्थान विशेष पर 'स्वर्ग' है जहां ईश्वर की कृपा से मनुष्य जीवन में अच्छे व श्रेष्ठ काम करने वाले मनुष्य जाकर सुखपूर्वक निवास करते हैं। इस मान्यता में कितनी सच्चाई है, इसकी खोज शायद ही कोई करता हो। स्वर्ग के प्रति यह मान्यता भिन्न-भिन्न मतों के आचार्यों, विद्वानों व उनके अनुयायियों ने अपने-अपने धर्म को महिमा-मण्डित करने व अपनी भ्रान्तियों के कारण की हैं। भ्रान्तियां न हो, इसके लिए यथार्थ ज्ञान की आवश्यकता होती है। यथार्थ ज्ञान का साधन ईश्वरीय ज्ञान वेद है। वेदों के आधार पर स्वर्ग का जो सत्य स्वरूप सामने आता है वह यह है कि "स्वर्ग नाम सुख विशेष भोग और उसकी सामग्री की प्राप्ति का है। स्वर्ग की यह परिभाषा वेदों के मर्मज्ञ विद्वान महर्षि दयानन्द प्रदत्त है। स्वर्ग की इस परिभाषा पर विचार करने पर स्वर्ग का यथार्थ स्वरूप ज्ञात होता है। स्वर्ग मनुष्य व उसकी जीवात्मा द्वारा सुख विशेष का भोग और सुख विशेष की सामग्री को कहते हैं। सुखों का भोग हम अपनी पांच ज्ञान इन्द्रियों के द्वारा करते हैं। हमारी यह इन्द्रियां सुखों का भोग कराने में उपकरण हैं जबकि सुखों का भोग जीवात्मा करता है। आंखों से हम दृश्यों को देखते हैं, कानों से शब्दों को सुनते हैं, नाक से गन्ध सूंघते हैं, जिह्वा से रस का ज्ञान प्राप्त करने के साथ उसका भोग करते हैं एवं त्वचा से स्पर्श को करके सुख व दु:ख का अनुभव करते हैं। इन पांच प्रकार के भोगों में जो सुख व प्रसन्नता देने वाले भोग होते हैं वह सब स्वर्ग की सामग्री कहलाते हैं। जिन भोगों को भोगने से मनुष्यों को सुख के स्थान पर दुख होता है, उसे स्वर्ग न कहकर नरक की संज्ञा दी जाती है। अत: मनुष्य जीवन में जिसकी सभी इन्द्रियां बलवान हैं और जिसके पास सभी इन्द्रियों को सुख प्रदान करने की प्रचुर सामग्री है, वही व्यक्ति सुखी व स्वर्ग में है, कहा जाता है। इससे ज्ञात हुआ कि स्वर्ग मनुष्य जीवन में सुख की स्थिति को कहा जाता है। संसार या ब्रह्माण्ड में सुखी मनुष्य, स्वर्ग में है, माना जा सकता है। इस व ब्रह्माण्ड की अन्य ऐसी पृथिवी से भिन्न कहीं कोई ऐसा स्थान नहीं है जिसे स्वर्ग की संज्ञा दी जा सके। स्वर्ग की यह स्थिति मनुष्य को कुछ तो अपने प्रारब्ध से प्राप्त होती है और कुछ उसे इस जीवन में ज्ञानपूर्वक वेद विहित शुभ कर्मों को करके प्राप्त होती है। इसके दो भाग किए जा सकते हैं। पहला भाग तो यह कि सुखों का भोग करने के लिए हमें अपनी इन्द्रियों व शरीर को स्वस्थ निरोग व बलवान बनाना है। यदि हमारा शरीर निरोग, स्वस्थ व बलवान नहीं होगा तो फिर सुख की असीमित सामग्री भी हमारे लिए स्वर्ग नहीं हो सकती। एक मधुमेह के रोगी के लिए रसगुल्ला, चावल, आलू के व्यंजन, नाना प्रकार के मीठे फल, हलुआ व खीर स्वाद में सुख अवश्य पहुंचा सकते हैं परन्तु परिणाम में यह दुख व नरक का कारण बनते हैं।

इसी प्रकार से अन्य रोगों की भी स्थिति है। अत: स्वर्ग का सुख भोगने के लिए शरीर का स्वस्थ, निरोग व बलवान होना आवश्यक है। इसके लिए मनुष्य को कुछ नियमों का पालन करना होता है। रात्रि 10 बजे सोना व प्रात: 4 बजे जागना आवश्यक है। जागने के बाद भी शौच से निवृत्त होकर संक्षिप्त ईश्वरोपासना कर शुद्ध वायु में भ्रमण, पश्चात् व्यायाम, प्राणायाम करना व इसके बाद स्नान कर सन्ध्या व अग्निहोत्र करना सुख का भोग करने के लिए आवश्यक है। इन्हीं कर्मों का परिणाम वस्तुत: सुख होता है। इसके पश्चात उचित मात्रा में प्रातराश लेकर ज्ञानार्जन व व्यवसायिक कार्यों को पूर्ण मनोयोग से करना भी सुखी मनुष्य की दिनचर्या का भाग है। यथासमय उचित मात्रा में शुद्ध शाकाहारी पौष्टिक भोजन करना जिसमें रोटी, दाल, सब्जी, चावल, दही आदि पदार्थ लिए जा सकते हैं। कुछ घंटे बाद फलाहार करना भी स्वास्थ्य के लिए हितकर रहता है। सायंकाल सूर्यास्त से पूर्व अग्निहोत्र व सन्ध्या कर भोजन करना वैदिक धर्म में विहित है। पारिवारिक जनों से वार्तालाप व गृह कार्यों के लिए भी समय देकर रात्रि को समय पर विश्राम व शयन करना उचित व आवश्यक है। इससे शरीर स्वस्थ बनेगा और इन्द्रियों की कार्य क्षमता में वृद्धि होने से मनुष्य सुखों का भोग करने में समर्थ हो सकता है। यही सुख की स्थिति है। अनाप-शनाप व सामिष भोजन, मादक द्रव्यों का सेवन व इन्द्रिय सुख के असंयमित कार्यों को करके सुख की अनुभूति करना स्वर्ग का भोग नहीं है। इसका परिणाम तो शीघ्र ही दु:ख के रूप में उत्पन्न होता है। इसको जानकर स्वास्थ्यवर्द्धक पदार्थों का उचित मात्रा में उचित समय पर भोजन के रूप में ग्रहण करना व पूर्ण संयमित जीवन सहित शरीर को स्वस्थ रखने के सभी उपाय करना ही स्वर्ग व उसके भोग में सम्मिलित है। ऐसा करके अनुमान कर सकते हैं कि मनुष्य का वर्तमान जीवन सुखी होगा और उसके परिणामस्वरूप कोई दु:ख नहीं भोगना होगा। ऐसा मनुष्य ही अपने आप को स्वर्ग के सुखों से युक्त अनुभव कर सकता है। यही स्थिति स्वर्ग की स्थिति है।

वैदिक संस्कृति व जीवन पद्धति धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की अनुगामिनी है। यह जीवन पद्धति मनुष्य जीवन में अभ्युदय व मृत्यु होने पर मोक्ष को प्राप्त कराने वाली है। यह मोक्ष भी एक प्रकार से स्वर्ग की उच्चतम परिणति ही है जहां मनुष्य का जीवात्मा दु:खों से सर्वथा मुक्त होता है। मोक्ष में जीवात्मा जन्म व मरण से परान्तकाल की अवधि तक के लिए छूट जाता है। इस परान्तकाल की अवधि 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्षों की होती है। मोक्ष की अवधि में जीवात्मा का अस्तित्व बना रहता है और यह शरीर रहित अपने यथार्थ अस्तित्व से ही ईश्वर के सान्निध्य में रहकर मोक्ष का सुख भोगता है। मोक्ष के यथार्थ स्वरूप का वर्णन महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ में किया है। दर्शन में भी इसका विवेचन हुआ है। इसको जानने के लिए यह समझना है कि मनुष्य का जन्म उसके पूर्वजन्मों के कर्मों के आधार पर मिलता है। जन्म लेकर मनुष्य व प्राणी अपने पूर्व जन्मों के शुभ व अशुभ व पाप व पुण्यरूपी कर्मों के सुख व दु:ख रूपी फलों को भोगते हैं। शुभ कर्मों का फल सुख व अशुभ का दु:ख होता है। यदि मनुष्य कोई अशुभ कर्म न करें तो उसे दु:ख मिलने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। इसी प्रकार से यदि वह शुभ कर्मों को ही करे और उसमें आसक्त न हो अर्थात् उनके फल की इच्छा न करे, अपने सभी शुभ कर्मों के फलों को ईश्वर को समर्पित कर दे, उसी प्रकार जिस प्रकार हम सुपात्रों को दान करते हैं और परिणाम में दान लेने वाले से किसी फल की इच्छा नहीं करते, तो इन सब कर्मों के परिणाम से मनुष्य पुर्नजन्म का भागी न होकर मोक्ष का पात्र बन जाता है। मोक्ष का अर्थ छूटना होता है। यह छूटना जन्म व मरण तथा दुखों से होता है। मोक्ष के लिए यह आवश्यक है कि मनुष्य व कर्मों का कर्त्ता ईश्वरोपासक हो, यज्ञ व अग्निहोत्र का करने वाला हो, माता-पिता, आचार्यों का सेवक व सत्कार करने वाला, अन्य सभी शुभ कर्मों को भी करने वाला और इसके साथ ईश्वरोपासना के प्रमुख फल सम्यक ध्यान व समाधि को सिद्ध किए हुए हो। समाधि में ईश्वर का साक्षात्कार व प्रत्यक्ष होता है। इससे मनुष्य को विवेक की प्राप्ति होती है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

हम और हमारा परिवेश

-ले० डॉ. एच. कुमार कौल डायरैक्टर गांधी आर्य सी. सै. स्कूल, बरनाला

आज का युग इक्कीसवीं सदी का युग है। किसी ने सोचा नहीं था कि इस युग में मानव समाज औद्योगिकता की अनेक मंजिले तय करते हुए उस जगह तक जा पहुँचेगा जहाँ आदमी शून्य होगा और मशीनें सर्वोत्तम। वह चांद तक पहुँच गया है परन्तु इस मशीनी युग में उसके सब मूल्य न केवल परिवर्तित हो गए हैं बल्कि प्रतिदिन ध्वस्त होते जा रहे हैं। हम चाहें स्वीकार करें या न करें परन्तु सच हमें स्वीकार करना पड़ेगा कि विज्ञान के इस युग में हम चलती फिरती मशीन बन गए हैं। यदि गत सौ वर्षों से परिवेश और वातावरण पर दृष्टिपात करें, सारी बातें स्वत: ही हमारी समझ में आ जायेगी। हम प्रतिक्षण अपने उद्देश्यों, अपनी सभ्यता और संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं। अब विश्वास, शान्ति, सच्चाई, आत्मीयता और निष्कपट जैसे शब्द हमारे लिए निरर्थक होकर रह गये हैं। क्रोध, ईर्ष्या, घृणा, छलकपट हमारे जीवन का अबलम्ब बन गये हैं। और हम अन्धाधुन्ध निरुद्देष्य से भागते हुए मंजिल पाने के लिए दौड़ रहे हैं।

योग्यता और नैतिक अध: पतन के इस वातावरण में अध्यापक भी अपने कर्त्तव्य से बच नहीं सकते। शिक्षा और अध्यापन की अपेक्षा उनका अधिकतर समय चाय, कॉफी, टयूशन तथा क्लब के मनोरंजक आमोद-प्रमोद में व्यतीत होता है। दुर्भाग्य वश हमारी शिक्षण संस्थाएँ भी नवयुवकों व नवयुवतियों को शिक्षा देने व सभ्यता संस्कृति की शिक्षा देने में असफल रही है। माता-पिता अपने बच्चों पर पानी की तरह पैसा बहा रहे हैं। पुस्तकालयों और पुस्तकें खरीदनें के लिए भारी धन खर्च किया जा रहा है। परन्तु कम विद्यार्थी इन पुस्तकों से लाभ उठा पाते हैं। अधिकतर विद्यार्थी इन पुस्तकों को अपनी रुचि और स्तर से कम समझते हैं। वे तो अपना अधिकतर समय मनोविनोद, खेल-तमाशों ऐश्वर्यपूर्ण विलासों में व्यतीत होता हैं। इतना ही नहीं, बहुत से नवयुवक अपनी पुस्तकें बेचकर मादक द्रव्य खरीदते हैं। युवा वर्ग नैतिक मूल्यों को खुली चुनौती देने लगे हैं। सजीवता, साहस और उत्साह की जगह उनके चेहरों पर निराशा, उदासी और निर्जीवता देखने को मिलती है। माता-पिता के सपने चकनाचूर हो रहे हैं और नवयुवकों का भविष्य अंधकार पूर्ण दिखाई दे रहा है। उन्हें नौकरी और व्यवसाय के प्रश्न दुर्गम पहाड़ रहे हैं।

आज की स्थिति पर शायर की पक्तियाँ बरबस याद आ जाती है :

''हम तहजीब अपने खंजर से,
आप ही खुदकशी करेगी।
जो शाखे नाजुक पर आशियाना
बनेगा, नापायदार होगा।।''

आज हम उपर्युक्त शेयर को पूरे उत्साह और उमंग से पूरा कर रहे हैं। पहले हम केवल पश्चिमी साहित्य की ध्वसांत्मक प्रवृत्तियों को ही कोसा करते हैं। परन्तु दुर्भाग्य से अब तो भारत में बनी अश्लील फिल्मों का प्रदर्शन युवा पीढ़ी पर विनाशकारी प्रभाव डाल रहे हैं। विड़म्बना ये है कि इन अश्लील फिल्मों को हमारा सैंसर बोर्ड भी स्वीकृत कर देता है। ये चित्र हमारी सभ्यता और संस्कृति पर भारी पड़ रहे हैं, क्योंकि हम सिर से पैर तक पाश्चात्य रंग में रंग चुके हैं।

हमारे चारों ओर का विषैला परिवेश हमें धुन की तरह चट करता जा रहा है। युवा पीढ़ी की वेशभूषा, चाल-ढ़ाल और बातचीत के ढंग बदल चुके हैं। हमारा खाना-पीना, चलना-फिरना सब डिसको संस्कृति से आक्रान्त हो चुके है। आज हम स्वामी विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती, डा. राधाकृष्णन आदि के विचार भूल चुके हैं। आज की युवा पीढ़ी अपने आप को अधिक बुद्धिमान, दूरदर्शी, योग्य समझती है इसलिए बड़ों की बात मानने को तैयार नहीं।

हम पूरी तरह भौतिकवादी बन चुके है। अपने पड़ोसी को धनी व सम्पन्न देखकर ईर्ष्या की आग में झुलसने लगते है। अधिक अमीर बनने की चाह में अनुचित व हेय साधनों का प्रयोग करने से नहीं हिचकते आगे बढ़ने की चाह इस कदर बढ़ चुकी है कि ईमानदारी और अतंरात्मा को भी दाँव पर लगा रखा है।

हमारे रहन सहन व चिंतनमनन पर विज्ञान का प्रभाव भी विचारणीय है। विज्ञान ने समुद्र और अतंरिक्ष की सीमाओं को पाटकर सारे ब्रह्माण्ड की परिधि को एक इकाई बना दिया है। समय ने अंतर को मिटा दिया है। इस अवसर पर हमें डाक्टर की परिधि को एक इकाई बना दिया है। समय ने अंतर को मिटा दिया है। इस अवसर पर हमें डाक्टर सर मुहम्मद इकबाल के ये शब्द याद आ रहे है:

''ढूंढने वाला सितारो की गुंजर
शाहो का।
अपने उफकार की दुनिया में
सफर कर न सका।
जिसने सूरज की शाओ को
गिरफ्तार किया।
जिन्दगी की शबे तारीक सहर
कर न सका।

प्रगति और उन्नति के पड़ाव पर पड़ाव तय करते हुए भी हम अपनी अंतरात्मा को शुद्ध, पवित्र व उज्जवल न कर सके तथा अपने मन की सत्यता व पवित्रता की ज्योति से प्रकाशवान नहीं रख सके। निर्बल और असहाय लोगों की सहायता की भावना हमारे अन्त: करण से निर्मूल हो चुकी है।

आर्थिक लिप्सा हमारी रग-रग में बसी हुई है। हम कर्त्तव्य और अधिकार में संतुलन बनाएँ नहीं रख सके। कर्त्तव्य की कम से कम पूर्ति और अधिकारों की अधिक से अधिक प्राप्ति, हमारा सबसे अधिक ध्यान आर्थिक लाभ पर केंद्रित रहता है। हमने कभी अपने वर्तमान में झांक कर यह विश्लेषण करने का साहस नहीं किया कि हमारी नवीनता की इस ललकभरी होड़ ने हमें वास्तविकता और पवित्रता से कितनी दूर धकेल दिया है।

हम इस स्थिति को जीवन की प्रभावपूर्ण प्रभात नहीं कह सकते, अपितु उदास एवं अस्पष्ट संध्या का नाम अवश्य दे सकते है।

पृष्ठ 5 का शेष-स्वर्ग व मोक्ष.....

यह स्थिति अनुमानत: तब आती है जब मनुष्य के प्राय: सभी अशुभ कर्मों का भोग समाप्त हो गया हो। ईश्वर साक्षात्कार के बाद मृत्यु तक के जीवन को जीवन्मुक्त अवस्था कहा जाता है। मृत्यु होने के समय तक ऐसी जीवात्मा के जिन किन्हीं शुभ व अशुभ कर्म का भोग शेष रह जाता है उनके परिणामस्वरूप एक परान्तकाल की अवधि बीत जाने पर नए सर्गारम्भ व सृष्टि की उत्पत्ति में मुक्त जीवात्मा का मनुष्य जन्म होता है। यह मोक्ष की अवस्था स्वर्ग नहीं अपितु स्वर्ग से ऊंची व सर्वोच्च उन्नत जीवन की अवस्था है। यह मोक्ष केवल ईश्वरभक्तों, ऋषियों व योगियों, वेदभक्तों व वेदाचार्यों तथा सद्कर्मों को करने वाले मनुष्यों को ही प्राप्त होता है। वेदेतर संसार की कोई भी जीवन प्रणाली नहीं जिसमें मोक्ष प्राप्ति की सम्भावना हो। अत: जीवनोन्नति, स्वर्ग व मोक्ष की प्राप्ति के लिए मनुष्य का वेद व वैदिक धर्म की शरण में आना परमावश्यक है। अनेक तर्कों के मोक्ष के स्वरूप व मोक्ष के जीवात्मा के सुख व आनन्द के भोग की अवस्था को सिद्ध किया जा सकता है। विस्तार भय से इसे इस लेख में सम्मिलित नहीं कर पा रहे हैं। इतना कहना ही समीचीन है कि आनन्द से परिपूर्ण ईश्वर का सान्निध्य प्राप्त मुक्त जीवात्मा सुखी व आनन्दित होगा, दु:खी किंचित नहीं हो सकता। यदि मनुष्य जीवन व जीवात्मा की परमगति है। स्वर्ग व मोक्ष के बारे में समाज में मिथ्या धारणाएं प्रचलित हैं। इसका निराकरण करने के लिए हमने इस संक्षिप्त लेख में प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

ऋषि जन्मोत्सव

आर्य समाज मन्दिर कमालपुर होशियारपुर में आज दिनांक 14-02-2016 (रविवार) को हवन यज्ञ का अनुष्ठान किया गया जिसमें आहलुवालिया कुलदीप राय (सपत्नी) ने यज्ञ पद को सुशोभित किया। नगर से आर्य परिवारों वा आर्य जनों ने हवन यज्ञ में बढ़-चढ़ कर आहुतियां डाली और देव दयानन्द को स्मरण किया। श्री जगदीश भाटिया ने मन्त्र पाठ करवाया और श्रद्धेय आचार्य भद्रसेन ने आशीर्वाद की वर्षा की।

दयानन्द हाल में ऋषि की जय-जय कार के साथ आर्यजन पहुँचे। मंच से महर्षि दयानन्द जी सरस्वती को नमन करते हुए कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। इंगलैड से पधारी श्रीमती ऊषा मायर ने स्तुति वंदना का सुन्दर गायन किया, श्रीमती सरोज धीर ने ऋषि को भजन के माध्यम से याद किया और फिर श्रीमती उपासना बहल ने दीर्घ स्वर में ऋषि जीवन की समूची कहानी कह डाली। उपस्थित आर्य जन भाव विभोर हो गये।

मंच से सचिव प्रो० यशपाल वालिया ने सभी उपस्थित आर्य जनों का अभिनन्दन करते हुए ऋषि को नमन किया। दयानन्द 19वीं शताब्दी में सचमुच वैदिक काल के अनुरूप ऋषि हुए। यश और अपरा के ज्ञान में जिये और अध्यात्म में जगे। वे तो महामानव थे, मानवता के महाकाव्य और भारत की स्वतन्त्रता के जनक थे। स्वामी दयानन्द सत्य शाश्वत सत्य के लिये जिये और सत्य के लिये ही संसार से विदा हुए। तत्पश्चात प्रो० पी. एन. चोपड़ा प्रचार मन्त्री ने अपने मुख्य व्याख्यान में आज के परिपेक्ष्य में ऋषि दयानन्द की सीख को जीवनयापन के लिए प्रकाश स्तम्भ बताया। आज का मानव तरह-तरह का ज्ञान अर्जित करता हुआ भी अतृप्त है, कारण, अन्नमय कोष से मनोरमा कोष तक ही टिका रहना उसकी प्यास को शांत नहीं कर सका। मन की उधेड़ बुन से जब व्यक्ति आगे बढ़ता है तो अपने सामने वह आनंद का संचार देखता है और यही आनंदमय कोष जिसके अंश मात्र से ही मानव अपने जीवन को सार्थक बना लेता है। ऋषि दयानन्द ने अधर्म और अज्ञान में लुप्त लोगों के दर्द को जाना। वे जीवन में तीन बार रोये और अन्तिम बार तब रोये जब गंगा के दूसरे पार उन्होंने देखा कि कुछ निर्धन और भ्रमित लोग अपनी लड़कियों को दान में दे रहे थे और धूर्त पंड़े उन्हें ग्रहण कर रहे थे। रात भर ऋषि सोए नहीं, खाना नहीं खाया ऋषि दयानन्द को शत-शत नमन। प्रि० के० सी० शर्मा ने मुख्य अतिथि एवं सभी उपस्थित आर्य जनों का धन्यवाद किया। अंत में सभी उपस्थित आर्यजनों ने मिल बैठ ऋषि प्रसाद शांति पाठ के पश्चात चखा।

-बिमला भाटिया उप प्रधाना।

ऋषि बोधोत्सव पर कार्यक्रम का आयोजन

आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मोत्सव व बोधोत्सव पर भव्य ऋषि मेले का आयोजन दिनांक 29 फरवरी से दिनांक 6 मार्च 2016 तक किया गया है। इस अवसर पर पं. विजय शास्त्री जी के प्रवचन और श्री संदीप आर्य भजन मण्ड़ली द्वारा भजन होंगे। मुख्य कार्यक्रम दिनांक 6 मार्च 2016 रविवार को विश्व शान्ति महायज्ञ के साथ शुरू होगा। ध्वजारोहण श्री अविनाश घई जी द्वारा किया जाएगा। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सुदर्शन शर्मा जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब होंगे। मुख्य वक्ता श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब होंगे। आप सभी से प्रार्थना है कि सपरिवार इष्ट मित्रों सहित कार्यक्रम में पधार कर उत्सव की शोभा को बढ़ाएं। **-सुदेश आर्य मन्त्री आर्य समाज भार्गव नगर**

ऋषि बोधोत्सव का पर्व मनाया जाएगा

आर्य समाज सरहिन्द में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मदिवस एवं ऋषि बोधोत्सव का पर्व दिनांक 29 फरवरी से 3 मार्च 2016 तक बड़ी श्रद्धा व धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर आचार्य नारायण सिंह के प्रवचन तथा श्री जगत वर्मा जी के भजन होंगे। इस अवसर पर भव्य शोभा यात्रा का आयोजन किया जाएगा जिसका प्रतिनिधित्व श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं श्री अशोक परूथी रजिस्ट्रार आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब करेंगे। आप सभी से प्रार्थना है कि सपरिवार इस कार्यक्रम में पधार कर कार्य्रकम की शोभा को बढ़ाएं। **-जगनरेश सूद मन्त्री आर्य समाज सरहिन्द**

पृष्ठ 2 का शेष-कौन प्रभु.....

प्राय: हम लोग प्रकृति की अर्थात् संसार की, धन वैभव की उपासना करते हैं। यह बलबुद्धि के समान है, जैसे बच्चा खिलौने देखकर उनमें मस्त हो जाता है और मां को ही भूल जाता है। ऐसे लोग इसी लोक को मानते हैं व बार-बार मृत्युपाश में आते रहते हैं। कठोपनिषद का ऋषि कहता है कि प्रभु का ज्ञान लोगों को सुनने को नहीं मिलता अर्थात् केवल कानों से सुनने का भाव नहीं है। यहां पर सुनने का भाव है कि हम प्रभु के ज्ञान को हृदयगम नहीं कर पाते। हम लक्ष्मी के भक्त बने रहते हैं और नारायण से दूर रहते हैं। जो कण्वास है अर्थात् बुद्धिमान है वह प्रभु के ज्ञान को हृदयगम कर लेता है और सच्चा ज्ञान उतना ही है जितना हमारे आचरण में आ जाता है। शेष तो शाब्दिक ज्ञान बनकर रह जाता है। बुद्धिमान, मेधावी लोग प्रभु को भजते हैं, वही कण्वास है। वह ही अपना मानव जीवन सफल कर पाते हैं।

इस मन्त्र का तीसरा शब्द है "वृक्तबर्हिष"। इसका अभिप्राय है जो ऋत्विज है अर्थात् ऋतु-ऋतु में यज्ञ करने वाले हैं, आसन लगाने वाले हैं। श्रद्धा व प्रेम से घी, सामग्री, सुमिधा व भात से मन्त्रोच्चारण करते हुए यज्ञ, हवन करते हैं। ऐसे लोग पृथ्वीलोक से यानि भोगविलासों से ऊपर उठकर अन्तरिक्ष लोक अर्थात् सत्संग, स्वाध्याय की ओर बढ़ते हैं। फिर धीरे-धीरे संयम, धारणा, ध्यान, समाधि के द्वारा ऐसे लोग द्यौलोक को प्राप्त कर लेते हैं। वे अपनी वासनाओं को उखाड़ फेंकते हैं। प्रभु ध्यान में डूबे रहते हैं। मन प्रभु के सिवाय कहीं और लगता ही नहीं। शांति और आनन्द को प्राप्त कर लेता है।

इस मन्त्र का चौथा शब्द है "हविष्मन्त:" जिसका अभिप्राय है कि जो सदा अपने हाथों हवियां रखते हैं। ऐसे व्यक्ति सदैव अपने झोले में अन्न, खाद्य पदार्थ, दूध, फल, वस्त्र, कम्बल, शाल, धन, ज्ञान, विज्ञान आदि पदार्थ रखते हैं ताकि जहां कहीं ज़रूरतमंद, साधु, सन्यासी, विद्वान्, विद्यार्थी मिले, उनको श्रद्धा व प्रेम से दिया जा सके। जो दूसरे को दे के खाता, पीता, पहनता है, वह हविष्मन्त है। जिसका सादा जीवन है और उच्च विचार है, प्रभु के प्रति आत्मसमर्पण की भावना है, अतिथि यज्ञ करता है, माता-पिता की सेवा। सुश्रुषा करता है, ऐसा व्यक्ति प्रभु की उपासना करता है। श्रद्धा व प्रेम से किया हुआ दान व सेवा सदैव अधिक फलदायी व आशीर्वाद भरपूर होता है। यद्यपि बिना श्रद्धा के दान व सेवा भी कुछ फलदायी तो अवश्य है।

इस मन्त्र का अन्तिम शब्द है "अरङ्कृत" अर्थात् अलंकृत। जो अपने आपको अलंकृत करना चाहते हैं। क्या हमें अपने को वस्त्रों व आभूषणों से अलंकृत करना है, नहीं। मानव जीवन मिला है तो अपने को अलंकृत करो यज्ञ आदि शुभ कर्मों से, शास्त्रों के श्रवण, मनन से, अध्यात्म की राह पकड़ कर श्रेय मार्ग पर चलने से, परोपकार, दान-पुण्य, सत्कर्म, निष्काम कर्म करके। अलंकृत वो होता है जो अंलकर सकता है। अलं का अर्थ है बस जो घर परिवार को अलं कह सकता है वो आत्मा-परमात्मा के बारे में सोच विचार करके अपने जीवन को समाज व राष्ट्र को उन्नत कर सकता है। प्रात: सोने को, टी. वी. को, फालतू देखना, सुनना, बोलना, विचारना इन सबको अलं करना है। सामान्य कार्यों को अलं करके स्वाध्याय, सत्संग, प्रवचन, ध्यान, भजन से अलंकृत जो व्यक्ति हो जाता है, वही आत्मकल्याण कर सकता है। ऐसे व्यक्ति प्रभु को भजते हैं, उसकी उपासना करते हैं।

महर्षि दयानन्द जी सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति हर समय उपासना में रहता है। उपासना का अर्थ है समीप रहना। हम या तो प्रकृति अर्थात् संसार के समीप रहते हैं अथवा प्रभु के समीप रहते हैं। यदि हमें सचमुच कुछ पाने की लालसा है तो उस प्यारे प्रभु की उपासना करनी होगी जो हमारी मनोवांछित कामनाओं से पूर्ण कर सकता है और साथ ही मोक्ष की प्राप्ति भी करवा सकता है।

ओ३म के ही ध्यान से, और ध्यान से ही योग तक,

जीवन के अन्तिम लक्ष्य तक,

यह ओ३म् ही पहुंचाएगा।

वेदवाणी

अमरता !

जुहुरे वि चितयन्तोऽनिमिषं नृम्णं पान्ति।
आ दृळ्हां पुरं विविशुः।। -ऋ० ५।१९।२
ऋषिः- आत्रेयो वव्रिः।। **देवता-**अग्निः।। **छन्दः-**गायत्री।।

विनय-एक नगरी है जोकि बिल्कुल दृढ़ है, अभेद्य है, इसमें पहुंच जाने पर हम पर किसी भी शत्रु का आक्रमण सफल नहीं हो सकता। क्या कोई उस स्थान पर पहुंचना चाहता है ? वहां पहुंचने का मार्ग कुछ विकट है, कड़ा है, आसान नहीं है। वहां पहुंचने वालों को ज्ञानपूर्वक स्वार्थ त्याग करते जाना होता है और सदा जागते हुए अपने 'नृम्ण' की आत्म-बल की रक्षा करते रहना होता है, ये दो साधनाएं साधनी होती हैं। कई लोग अपने कर्त्तव्य व उद्देश्य का विचार किए बिना यूं ही जोश में आकर 'आत्म बलिदान' कर डालते हैं। ऐसा करना आसान है, परन्तु यह सच्चा बलिदान नहीं होता। इससे यथेष्ट फल नहीं मिलता। इस पवित्र उद्देश्य के सामने अमुक वस्तु वास्तव में तुच्छ है, इसलिए अब इस वस्तु को स्वाहा कर देना मेरा कर्त्तव्य है- इस प्रकार के स्पष्ट ज्ञान के साथ, बिना किसी जोश के, वे आत्म-बलिदान के नाम से आत्मघात कर रहे होते हैं। वहां पहुंचने के लिए तो आत्मा का घात नहीं, किन्तु आत्मा की रक्षा करनी होती है। हम लोग प्रायः क्रोध करके, असत्य बोलकर, इन्द्रियों को स्वच्छन्द भोगों में दौड़ाकर अपना आत्म-तेज, आत्मवीर्य, आत्मबल खोते रहते हैं, परन्तु वे पुरुष अपने इस 'नृम्ण' आत्मबल की बड़ी सावधानी से, सदा जागरूक रहते हुए, बड़ी चिन्ता से, रक्षा करते हैं। वे पल-पल में अपनी मनोगति पर भी ध्यान रखते हुए देखते रहते हैं कि कहीं अन्दर कोई आत्मबल का क्षय करने वाला काम तो नहीं हो रहा है एवं रक्षा किया हुआ आत्मबल ही उस दृढ़ पुरी में पहुंचाने वाला है। वास्तव में ये दोनों साधनाएं एक ही हैं, यदि हम इनके इस सम्बन्ध पर विचार करें कि ऐसे लोग आत्मबल की रक्षा करने के लिए शेष प्रत्येक वस्तु का बलिदान करने को उद्यत रहते हैं और ये सदा इतने सत्य के साथ आत्म बलिदान करते जाते हैं कि उनके प्रत्येक आत्म बलिदान का फल यह होता है कि उनका आत्मबल बढ़ता है। आओ! हम भी आत्महवन करते हुए और आत्मबल की रक्षा करते हुए चलने लगें और उस मार्ग के यात्री हो जाएं जो अभयता, अजातशत्रुता, अमरता और अभेद्यता की दृढ़ पूरी में पहुंचाने वाला है।

-वैदिक विनय से साभार

सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारियों की सेवा में

मान्य महोदय,
सादर नमस्ते।

आप सबको विदित ही है कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म दिवस 4 मार्च 2016 दिन शुक्रवार को आ रहा है। इसलिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों एवं शिक्षा संस्थाओं के पदाधिकारियों से निवेदन है कि उस दिन आर्य समाज एवं शिक्षा संस्थाओं के भवनों को दीपमाला से सुसज्जित करें और नए ओ३म ध्वज लगाएं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का राष्ट्र के निर्माण में अभूतपूर्व योगदान है इसलिए महर्षि दयानन्द के कार्यों से आम जनता और स्कूल के बच्चों को अवगत कराने के लिए अपनी-अपनी संस्थाओं में कार्यक्रम का आयोजन करें। अपने कार्यक्रम की सूचना सभा कार्यालय में अवश्य भिजवाने की व्यवस्था कीजिए ताकि आर्य मर्यादा में प्रकाशित की जा सके।

धन्यवाद सहित

भवदीय
प्रेम भारद्वाज सभा महामन्त्री

गुरूकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

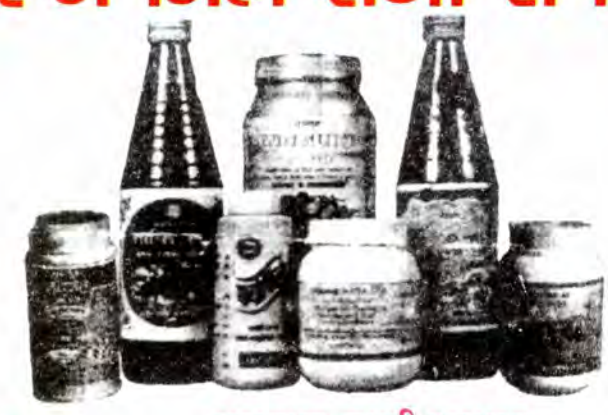

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।